



बिहार

प्राथमिक/ माध्यमिक/ उच्च माध्यमिक शिक्षक

बिहार लोक सेवा आयोग

भाग - 1

हिंदी एवं अंग्रेजी

बिहार शिक्षक

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
हिन्दी		
1.	वर्ण विचार	1
2.	संधि	5
3.	समास	21
4.	संज्ञा	27
5.	सर्वनाम	29
6.	विशेषण	30
7.	क्रिया	31
8.	कारक एवं विभक्ति	38
9.	अव्यय/अविकारी शब्द	41
10.	उपसर्ग	45
11.	प्रत्यय	55
12.	वर्तनी शुद्धि एवं वाक्य-शुद्धि	63
13.	विराम चिह्न और उनके प्रयोग	77
14.	विलोम – शब्द	81
15.	पर्यायवाची	87
16.	अनेकार्थक शब्द	89
17.	मुहावरे	92
18.	लोकोक्ति	98
19.	राजभाषा की संवैधानिक स्थिति	101
20.	पारिभाषिक शब्दावली	103
21.	अपठित गद्यांश	109
English		
1.	Parts of Speech	
	• Noun	120
	• Pronoun	126

	• Adjective	131
	• Adverb	136
	• Verb	143
	• Conjunction	149
	• Preposition	155
2.	Articles	172
3.	Time and Tense	176
4.	Voice	185
5.	Narration	189
6.	Antonyms & Synonyms	197
7.	One Word Substitution	210
8.	Idioms & Phrases	232
9.	Comprehension Passage	245

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

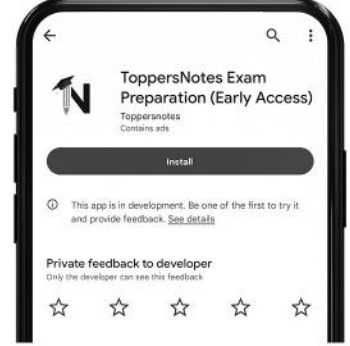
नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करें।
ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखें :-



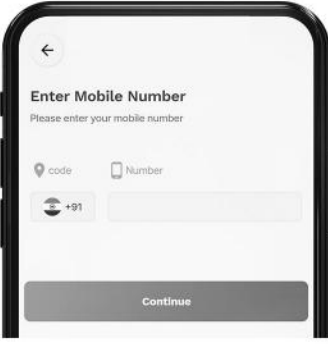
ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें।



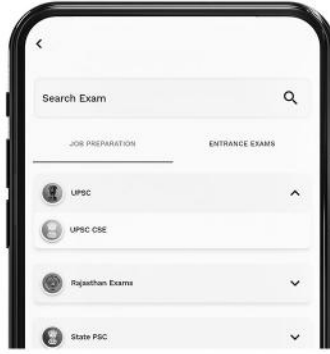
टॉपर्सनोट्स
एग्जाम प्रिपरेशन ऐप



टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से।



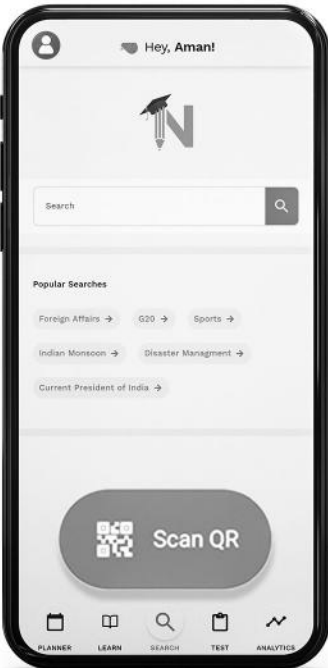
लॉग इन करने के लिए अपना मोबाइल नंबर दर्ज करें।



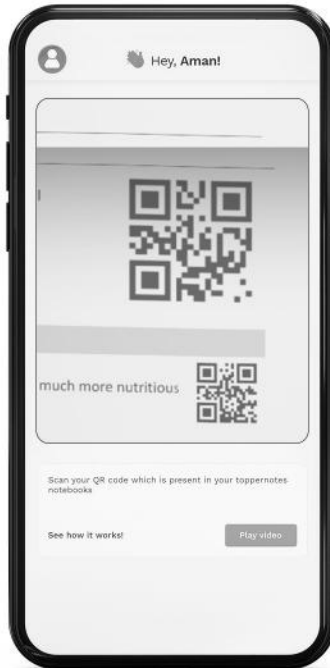
अपनी परीक्षा श्रेणी चुनें।



सर्च बटन पर क्लिक करें।



SCAN QR पर क्लिक करें।



किताब के QR कोड को स्कैन करें।



• सोल्युशन वीडियो
• डाउट वीडियो
• कॉन्सेप्ट वीडियो



• अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री



• विषयवार अभ्यास
• कमजोर टॉपिक विश्लेषण



• रैंक प्रेडिक्टर
• टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या [766 56 41 122](tel:7665641122) पर whatsapp करें।

वर्ण विचार



भाषा - पश्चिम विचार विनियम को भाषा कहते हैं।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है। भाष् का अर्थ है बोलना।
- भाषा की शार्थक इकाई वाक्य है। वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण है।
- जैसे - हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह् अ म् ऋ) हैं।

लिपि - किसी भाषा को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है। इसकी निम्न विशेषताएँ हैं।

- यह बाएँ से दायें लिखी जाती है।
- प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है।
- उच्चारण के अनुसूचक लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है।

व्याकरण - जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते हैं।

वर्ण - हिन्दी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता।

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है।

जैसे :- क, च, ट, अ, इ, उ

वर्ण के भेद :- 2 प्रकार हैं।

- स्वर वर्ण
- व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :- स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते हैं। हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी हैं।

जैसे - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :- मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

1. मात्राकाल के आधार पर - 3 प्रकार हैं।

(i) ह्रस्व स्वर - जिनके उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है।

जैसे - अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या - 4)

नोट :- (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते हैं)

(ii) दीर्घ स्वर - जिनके उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है - आ, ई, ऊ, ए, ऐ ओ, औ (कुल संख्या - 7)

(iii) प्लुत स्वर - जिनके उच्चारण में तीन मात्राओं का समय लगता है। स्वर के प्लुत रूप को दशानि के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है।

जैसे - अ^३, आ^३, इ^३, ई^३, उ^३, ऊ^३, ए^३, ऐ^३, ओ^३, औ^३,

(2) उच्चारण के आधार पर :- (2 प्रकार हैं)

(i) अनुनासिक स्वर - स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनों से बाहर आती है।

नोट - अनुनासिक रूप को दशानि के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है।

जैसे - अँ, आँ, इँ, ईँ, उँ, ऊँ, एँ, ऐँ, ओँ, औँ

(ii) अनुनासिक/निःसुनासिक स्वर - जब किसी स्वर का उच्चारण करने पर श्वाश वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है। वह अनुनासिक/ निःसुनासिक स्वर कहलाता है।

बिना चन्द्रबिंदु के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते हैं।

जैसे - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर - (3 प्रकार हैं)

(i) अग्र स्वर :- उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग में सर्वाधिक कम्पन होना।

जैसे - इ, ई, ए, ऐ

(ii) मध्य स्वर - उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन - अ

(iii) पश्च स्वर - उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन।

जैसे - आ, उ, ऊ, ओ, औ

पहचान :- निम्न शरणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

अ - मध्य

इ ई ए ऐ - अग्र

आ उ ऊ ओ औ - पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर - 2 प्रकार हैं।

(i) वृत्ताकार - उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाता।

जैसे :- ३, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार - उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर-नीचे फैलना।

जैसे - अ, आ, इ, ई, ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर - 04 प्रकार हैं।

(i) संवृत स्वर - उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना।

जैसे - इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्धसंवृत स्वर - उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोड़ा ज्यादा खुलना - ए, औ

(iii) विवृत - उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा खुलना। जैसे - आ

(iv) अर्धविवृत - उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोड़ा कम खुलना।

जैसे - अ, ऐ, औ, औ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते हैं।

हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्रिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती हैं।

जिनको तीन भागों में बाँटा गया है।

(i) स्पर्श व्यंजन - (27) (मूल 25 + 2 उत्क्रिप्त)

(ii) अंतः स्थ व्यंजन - (04)

(iii) ऊष्म व्यंजन - (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वाश वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करने के बाद मुख से बाहर निकलती है तो वह स्पर्श व्यंजन कहलाती है।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है -

(अ) 'क' वर्ग - क ख ग घ ङ

(ब) 'च' वर्ग - च छ ज झ ञ

(स) 'ट' वर्ग - ट ठ ड ढ ण

(द) 'त' वर्ग - त थ द ध न

(य) 'प' वर्ग - प फ ब भ म

(ii) अंतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियों में कम्पन होता है,

व उसके बाद श्वाश वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अंतःस्थ व्यंजन कहलाती है।

कुल अंतः स्थ व्यंजन - 4 हैं।

जैसे :- य व र ल

(iii) ऊष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वाश वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह ऊष्म व्यंजन कहलाता है।

कुल ऊष्म व्यंजन - 4 हैं।

जैसे - श ष र ह

संयुक्त व्यंजन - इसी श्रेणी में 4 व्यंजन शामिल किये जाते हैं।

क्ष - क् + ष

त्र - त् + र

ज्ञ - ज् + ञ

श्र - श् + र

व्यंजनों का वर्गीकरण - मुख्यतः 2 प्रकार का है।

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर

(2) प्रयत्न के आधार पर

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर -

i. कण्ठ स्थान - 'कण्ठ्य वर्ग'

सूत्र - अकुहविशर्जनीयानां कण्ठः

अ, आ, क वर्ग (क, ख, ग, घ, ङ) ह, विशर्ग (ः)

ii. तालु स्थान - तालव्य वर्ग

सूत्र - इच्युशानां तालु

इ, ई, च वर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) य, श

iii. मूर्धा स्थान - मूर्धान्य वर्ग

सूत्र - ऋटुशानां मूर्धा

ऋ, ॠ ट वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) र, ष

iv. दन्त स्थान - दन्त्य वर्ग

सूत्र - लृतुलशानां दन्ता

लृ, त वर्ग (त, थ, द, ध, न) ल, र

v. श्रोष्ठ स्थान - श्रोष्ठ्य वर्ग

सूत्र - उपपृथ्यानीया ना मो ष्ठी

उ, ऊ, प वर्ग (प, फ, ब, भ, म)

उपध्मानीय वर्ग (ँ, ँ, ं)

vi. नासिका स्थान - नासिक्य वर्ग

सूत्र - नासिका अनुस्वास्य (ञ्)

उमडणानां नासिका च

(ञ् ज ण न म्)

vii. दन्तोष्ठ स्थान - दन्तोष्ठ्य वर्ण
 सूत्र - वकारस्य दन्तोष्ठम् - व

(2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है -

- (i) कंपन के आधार पर
- (ii) श्वास वायु के आधार पर
- (iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कंपन के आधार पर - इसके आधार पर दो प्रकार के वर्ण होते हैं।

a) ऋद्योष वर्ण - प्रत्येक वर्ण का पहला + दूराक्षर वर्ण + श, ष, स + विशर्ग
 ऋद्योष वर्ण की ट्रिप - 1, 2 बजते ही उष्मा में विशर्जन का ऋद्योष हो जाता है। प्रत्येक वर्ण का पहला, दूरक्षर वर्ण, उष्म वर्ण (श, ष, स) विशर्ग

b) द्योष वर्ण - प्रत्येक वर्ण का 3, 4, 5 वर्ण + उ, ढ + य, र, ल, व, ह + श्भी स्वर + ऋनुस्वार
 द्योष वर्ण की ट्रिप - 3, 4, 5 की घुस लेते ही श्भी स्वरों को उ ढ के साथ नियम ऋनुस्वार अंदर कर दिया।

प्रत्येक वर्ण का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण + श्भी स्वर + उ ढ + ऋनुस्वार

(ii). श्वास वायु के आधार पर - मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं।

a) ऋल्पप्राण - प्रत्येक वर्ण का पहला, तीसरा, पाँचवा वर्ण + उ, र, ल, व + श्भी स्वर
 ऋल्प प्राण की ट्रिप - ऋल्प आयु में 1, 3, 5 का अंत हुआ व उ के साथ श्भी स्वर गये।
 ऋल्पप्राण में आने वाले व्यंजन - प्रत्येक वर्ण का पहला, तीसरा, पाँचवाँ वर्ण + अतःस्थ व्यंजन + उ श्भी स्वर

b) महाप्राण - प्रत्येक वर्ण का 2, 4 वर्ण + ढ + श, ष, स, ह
 महाप्राण - महाम 2, 4 घण्टे ढका रहने से उष्मा बढ़ती है।

महाप्राण में आने वाले वर्ण - प्रत्येक वर्ण का 2 व 4 वर्ण, + ऊष्म वर्ण (श, ष, स) + ह वर्ण

(iii). उच्चारण के आधार पर -

इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते हैं।

- 1) स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
- 2) स्पर्श संघर्षी व्यंजन (4) - च, छ, ज, झ
- 3) संघर्षी व्यंजन (4) - श, ष, स, ह
- 4) नाशिक व्यंजन (5) - उ., ज, ण, न, म
- 5) उद्विष्य व्यंजन (2) - उ, ढ
- 6) प्रकंपित व्यंजन (1) - र
- 7) पार्श्विक व्यंजन (1) - ल
- 8) संघर्षहीन व्यंजन (2) - य, व

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य ("वर्ण विचार" से संबंधित)

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्रायः दोनों स्वरों के मिलने से होती है।
 - सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संघि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है।
- | | |
|-----------------|-----------|
| समानाक्षर स्वर | संघि स्वर |
| (i) आ - अ + अ | ए - अ + इ |
| (ii) ई - इ + इ | ऐ - अ - ए |
| (iii) ऊ - उ + उ | औ - अ + औ |
- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम शाक्य पाणिनि की ऋषाध्यायी रचना में मिलता है।
 - हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है।
 - आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है।

.क - .करीब

खा - खाना

ग - गम

उ.ा - .जरा

.फ - .फन, .फाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.

औ (ँ)

जैसे - कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनों का आगमन अरबी/फारसी, अंग्रेजी भाषा से हुआ है।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान "विप्रसाद शितारे हिंद" को जाता है।
- काकल वर्ण के अन्तर्गत, (:) विशर्ग को शामिल किया जाता है।
- वर्तनी वर्णों में न, स, ल को शामिल किया जाता है।

- उच्चारण स्थानों के क्रमावा शरीर के वे अंग जो उच्चारण करने में सहायक हो करण कहलाते हैं। इसकी कुल संख्या चार होती है।
(1) जिह्वा (2) अधशेष (नीचे का होंठ) (3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आने वाले वर्णों को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागों में विभाजित किया गया है।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोड़ा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते हैं।
- हल् चिह्न (्) व्यंजन के स्वर रहित होने का परिचायक है। स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खड़ी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खड़ी पाई हटा दी जाती है। उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है।
जैसे- विद्या, पाठ्य, अपराह्न, पटा आदि।

1. नांद या संवार वर्ण - सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है।
2. विवार या श्वाश वर्ण - सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है।
3. स्पृष्ट वर्ण - सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है।
4. ईषत्स्पृष्ट वर्ण - अन्तस्थ व्यंजन (य, र, ल, व) वर्णों को ही कहा जाता है।
5. ईषद्विवृत वर्ण - उष्म व्यंजन (श, ष, स, ह)
6. रक्त वर्ण - प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
7. शोष्म व्यंजन वर्ण - प्रत्येक वर्ग का दूँसरा व चौथा वर्ण

नोट - हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ण होते हैं।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को शास्त्री के माध्यम से समझें।

स्वर	व्यंजन	कुल
स्वर 11	व्यंजन 33	44
-	उ., ङ. + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन)	46
-	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
-	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
	क ख ग ज .फ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट - सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते हैं।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूर्धा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हें उत्क्षिप्त वर्ण कहते हैं।

जैसे - उ. ङ.

नियम - 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे - उमरू, ढोलक, उलिया, ढक्कन, डाली

नियम - 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे - पण्डित, बुद्ध, अडा, खण्ड, मण्डल आदि।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के क्रमावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिंदु आता है।

जैसे - पढाई, लडाई, सडक, पकडना, ढूँढना आदि।

स्कार/रेफ या २ संबंधित नियम

नियम 1. - यदि २ के बाद व्यंजन वर्ण आए तो २ को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले २ का उच्चारण किया जाता है, २ को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है।

जैसे - कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात्, पुनर्जन्म, पुनर्निमाण, आशीर्वाद।

नियम 2. - यदि २ से पहले व्यंजन वर्ण आए तो २ को उसी व्यंजन वर्ण के मध्य में लिखा जाता है।

जैसे - प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता

संधि



संधि का अर्थ—मिलान

संधि की परिभाषा

- दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है वह संधि कहलाता है अर्थात् जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती है तो उसमें रूपान्तर आ जाता है, तब संधि कहलाती है।

जैसे –

प्रत्येक	–	प्रति + एक
विद्यालय	–	विद्या + आलय
जगदीश	–	जगत + ईश
आशीर्वाद	–	आशीः + वाद

संधि की परिभाषा

कामता प्रसाद के अनुसार

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास-पास आने के कारण उनके मेल से विकार होता है, उसे संधि कहते हैं।

किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार

जब दो या दो से अधिक वर्ण पास-पास आते हैं तो कभी-कभी उसमें रूपान्तर आ जाता है वह संधि कहलाती है।

संधि विच्छेद

- वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही संधि कहते हैं। परिणामस्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः वर्णों/ध्वनि को पुनः मूल रूप में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है।

जैसे—

वर्ण	+	मेल	=	संधि युक्त शब्द
रमा	+	ईश	=	रमेश
आ	+	ई	=	ए

- यहाँ (आ + ई) दो वर्णों के मेल से विकार स्वरूप 'ए' ध्वनि उत्पन्न हुई और संधि का जन्म हुआ। संधि विच्छेद के लिए पुनः मूल रूप में लिखना चाहिए।

जैसे—

शुभ	+	आगमन	–	शुभागमन
सत्	+	आचरण	–	सदाचरण
निः	+	ईश्वर	–	निरीश्वर

संधि के भेद

स्वर संधि	व्यंजन संधि	विसर्ग संधि
(स्वर + स्वर का मेल) महा + आत्मा (आ + आ)	स्वर + व्यंजन → परि + छेद (इ + छ) व्यंजन + स्वर → दिक् + अम्बर (क् + अ) व्यंजन + व्यंजन → सत् + वाणी (त् + व)	विसर्ग + स्वर → मनः + अविराम (: + अ) विसर्ग + व्यंजन → तपः + वन (: + व)

1. स्वर संधि

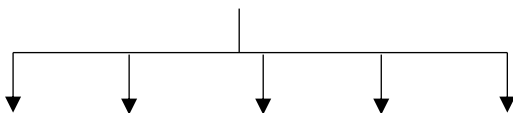
स्वर से स्वर का जब मेल होता है तो उसमें विशेष विकार की स्थिति के उत्पन्न होने को ही स्वर संधि कहा जाता है।



जैसे— विद्यार्थी – विद्या + अर्थी
आ + अ = आ

स्वर संधि के मुख्यतः पाँच भेद होते हैं—

स्वर संधि के भेद



दीर्घ संधि गुण संधि वृद्धि संधि यण संधि अयादि संधि

(i) दीर्घ संधि

- इस संधि में दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।
- यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, के बाद वे ही (अर्थात् समान) लघु या दीर्घ स्वर आ जायें तो दोनों मिलकर आ, ई, ऊ, ऋ हो जाते हैं।

(अ + अ = आ)



अ + अ = आ	(i) युग + अन्तर = युगान्तर युग् अ + अन्तर युगान्तर युग् आ न्तर युग् अ + अन्तर युग + अन्तर	(ii) स्व + अर्थ = स्वार्थ स्व् अ + अर्थ आ स्व् आ र्थ स्वार्थ
अ + आ = आ	(i) हिम + आलय = हिमालय हिम् अ + आ लय आ हिम् आ लय हिमालय	(ii) गमन + आगमन = गमनागमन गमन् अ + आगमन आ गमन् आ गमन गमना गमन
आ + अ = आ	(i) तथा + अपि = तथापि तथ् आ + अ पि आ त थ् आ पि तथापि	(ii) महा + अमात्य = महामात्य मह् आ + अमात्य आ म ह् आ मात्य महामात्य
आ + आ = आ	(i) प्रेरणा + आस्पद = प्रेरणास्पद प्रेरण् आ + आ स्पद आ प्रेरण् आ स्पद प्रेरणास्पद	(ii) चिकित्सा + आलय = चिकित्सालय चिकित्स् आ + आलय आ चिकित्स् आ लय चिकित्सालय
इ + इ = ई	(i) अति + इव = अतीव अत् + इव ई अत् + ई व अतीव	(ii) कवि + इन्द्र = कवीन्द्र क व् इ + इन्द्र ई क व् ई न्द्र कवीन्द्र
इ + ई = ई	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा प्रत् इ + ईक्षा ई प्र त् ई क्षा प्रतीक्षा	
ई + इ = ई	मही + इन्द्र = महीन्द्र मह् ई + इन्द्र ई मह् ई न्द्र महीन्द्र	
ई + ई = ई	नारी + ईश्वर = नारीश्वर ना र् ई + ईश्वर ना र् ई श्वर नारीश्वर	
उ + उ = ऊ	गुरु + उपदेश = गुरुपदेश गुर् उ + उपदेश ऊ	

	गुरु + ऊ पदेश गुरुपदेश	
उ + ऊ = ऊ	लघु + ऊर्मि = लघूर्मि ल घ उ + ऊर्मि <div style="text-align: center;"> $\underbrace{\hspace{1.5cm}}$ ऊ लघु ऊ र्मि लघूर्मि </div>	
ऊ + ऊ = ऊ	सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि सरयू ऊ + ऊर्मि <div style="text-align: center;"> $\underbrace{\hspace{1.5cm}}$ ऊ सरयू उ र्मि सरयूर्मि </div>	
ऋ + ऋ = ऋ	पितृ + ऋण = पितृण पितृ ऋ + ऋण <div style="text-align: center;"> $\underbrace{\hspace{1.5cm}}$ ऋ पितृ ऋ ण पितृण </div>	

नोट – ऐसे ऋ वाली संधियों से बने दीर्घ ऋ वाले शब्द हिन्दी में प्रचलित नहीं हैं।

दीर्घ संधि के उदाहरण

अन्नाभाव	–	अन्न + अभाव	अ + अ = आ	परम + अर्थ = परमार्थ
भोजनालय	–	भोजन + आलय	अ + आ = आ	
विद्यार्थी	–	विद्या + अर्थी	आ + अ = आ	
महात्मा	–	महा + आत्मा	आ + आ = आ	
गिरीन्द्र	–	गिरि + इन्द्र	इ + इ = ई	
महीन्द्र	–	मही + इन्द्र	ई + इ = ई	
गिरीश	–	गिरि + ईश	इ + ई = ई	
रजनीश	–	रजनी + ईश	ई + ई = ई	रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
भानूदय	–	भानु + उदय	उ + उ = ऊ	मुनी + इन्द्र = मुनीन्द्र
वधूत्सव	–	वधू + उत्सव	ऊ + उ = ऊ	अभिप्सा = अभि + ईप्सा
रामावतार	–	राम + अवतार	अ + अ = आ	भय + आक्रांत = भयक्रांत
सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी	अ + अ = आ	स्नेह + आविष्ट = स्नेहाविष्ट
रामायण	–	राम + अयन	अ + अ = आ	
धर्माधर्म	–	धर्म + अधर्म	अ + अ = आ	
पराधीन	–	पर + अधीन	अ + अ = आ	
पुण्डरीकाक्ष	–	पुण्डरिक + अक्ष	अ + अ = आ	
दैत्यारि	–	दैत्य + अरि	अ + अ = आ	
शताब्दी	–	शत + अब्दी	अ + अ = आ	
धर्मार्थ	–	धर्म + अर्थ	अ + अ = आ	
मुरारि	–	मुर + अरि	अ + अ = आ	

नीलाम्बर	-	नील + अम्बर	अ + अ = आ	
परमार्थ	-	परम + अर्थ	अ + अ = आ	
रुद्राक्ष	-	रुद्र + अक्ष	अ + अ = आ	
स्वाधीन	-	स्व + अधीन	अ + अ = आ	
गीताजली	-	गीत + अंजली	अ + अ = आ	
दीपावली	-	दीप + अवली	अ + अ = आ	
प्रार्थी	-	प्र + अर्थी	अ + अ = आ	
छिद्रान्वेषी	-	छिद्र + अन्वेषी	अ + अ = आ	
मूल्यांकन	-	मूल्य + अंकन	अ + अ = आ	
अन्त्याक्षरी	-	अंत्य + अक्षरी	अ + अ = आ	
सापेक्ष	-	स + अपेक्ष	अ + अ = आ	
अभयारण्य	-	अभय + अरण्य	अ + अ = आ	
सत्यार्थी	-	सत्य + अर्थी	अ + अ = आ	
नारायण	-	नार + अयन	अ + अ = आ	कंटक + आकीर्ण = कंटाकाकीर्ण
परमात्मा	-	परम + आत्मा	अ + आ = आ	
पदावलि	-	पद + अवलि	अ + आ = आ	
रत्नाकर	-	रत्न + आकर	अ + आ = आ	
निगमागमन	-	निगम + आगमन	अ + आ = आ	
पद्माकर	-	पद्म + आकर	अ + आ = आ	
शरणागत	-	शरण + आगत	अ + आ = आ	
सत्याग्रह	-	सत्य + आग्रह	अ + आ = आ	
विद्याध्ययन	-	विद्या + अध्ययन	आ + अ = आ	
परीक्षार्थी	-	परीक्षा + अर्थी	आ + अ = आ	
रेखांकित	-	रेखा + अंकित	आ + अ = आ	
मुक्तावली	-	मुक्ता + अवली	आ + अ = आ	
दावानल	-	दावा + अनल	आ + अ = आ	
तथापि	-	तथा + अपि	आ + अ = आ	
महाशय	-	महा + आशय	आ + आ = आ	
द्राक्षासव	-	द्राक्षा + आसव	आ + आ = आ	
विद्यालय	-	विद्या + आलय	आ + आ = आ	
महात्मा	-	महा + आत्मा	आ + आ = आ	
प्रेरणास्पद	-	प्रेरणा + आस्पद	आ + आ = आ	
कवीन्द्र	-	कवि + इन्द्र	इ + इ = ई	
अतिव	-	अति + इव	इ + इ = ई	
अभीष्ट	-	अभि + इष्ट	इ + इ = ई	
अतीत	-	अति + इत	इ + ई = ई	
महीन्द्र	-	मही + इन्द्र	ई + इ = ई	
महतीच्छा	-	महती + इच्छा	ई + इ = ई	

कपीश	-	कपि + ईश	ई + इ = ई	
प्रतीक्षा	-	प्रति + ईक्षा	ई + इ = ई	
अधीक्षण	-	अधि + इक्षण	ई + इ = ई	
अभीप्सा	-	अभि + इप्सा	ई + इ = ई	
नारीश्वर	-	नारी + ईश्वर	ई + ई = ई	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
सतीश	-	सती + ईश	ई + ई = ई	
लघूत्तम	-	लघु + उत्तम	उ + उ = ऊ	
सूक्ति	-	सु + उक्ति	उ + उ = ऊ	
अनूदित	-	अनु + उदित	उ + उ = ऊ	
गुरूपदेश	-	गुरु + उपदेश	उ + उ = ऊ	
भानूदय	-	भानु + उदय	उ + उ = ऊ	
सिंधूर्मि	-	सिंधु + ऊर्मि	उ + ऊ = ऊ	
भानूर्जा	-	भानु + ऊर्जा	उ + ऊ = ऊ	
वधूत्सव	-	वधू + उत्सव	ऊ + उ = ऊ	
चमूत्तम	-	चमू + उत्तम	ऊ + उ = ऊ	
मातृण	-	मातृ + ऋण	ऋ + ऋ = ऋ	
होतृकार	-	होतृ + ऋकार	ऋ + ऋ = ऋ	

दीर्घ संधि की पहचान

दीर्घ संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत आ, ई, ऊ की मात्राएँ (।, ी, ू) आती है और इनका विच्छेद इन्हीं मात्राओं से किया जाता है। जैसे - विद्यालय - विद्या + आलय

अपवाद

शक + अन्धु = शकन्धु मूसल + धार = मूसलाधार
 कर्क + अन्धु = कर्कन्धु मनस् + ईषा = मनीषा
 विश्व + मित्र = विश्वामित्र युवन् + अवस्था = युवावस्था

(ii) गुण संधि

- जब अ, आ के बाद इ, ई आए तब दोनों मिलकर 'ए' हो जाते हैं।
जैसे- देवेन्द्र - देव + इन्द्र (अ + इ = ए)
- अ, आ के बाद उ, ऊ आए तो दोनों मिलकर 'ओ' हो जाते हैं।
जैसे- वीरोचित - वीर + उचित (अ + उ = ओ)
- अ, आ के बाद ऋ, ॠ आए तो दोनों मिलकर अर् हो जाते हैं।
जैसे- महर्षि-महा + ऋषि (आ + ऋ = अर)

गुण संधि की पहचान

गुण संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत ए, ओ की मात्राएँ (ँ, ो) या र आता है (ँ) और इनका विच्छेद इन्हीं मात्राओं से किया जाता है।

गुण संधि को समझाने का तरीका

अ + इ = ए	गज + इन्द्र = गजेन्द्र गज् अ + इन्द्र └─┬─┘ ए गज् ऐ न्द्र गजेन्द्र
	नर + इन्द्र = नरेन्द्र नर् अ इ न्द्र └─┬─┘ ए नर् ए न्द्र नरेन्द्र
अ + उ त्र ओ	पर + उपकार = परोपकार पर् अ + उपकार └─┬─┘ ओ पर् ओ प कार परोपकार
आ + ऊ त्र ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि गंग् आ + ऊर्मि └─┬─┘ ओ

	<p style="text-align: center;">ऐ</p> <p>एक् ऐ क</p> <p>एकैक</p> <p>महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य</p> <p>मह् आ + ऐ श्वर्य</p> <p style="text-align: center;">ऐ</p> <p>मह् ऐ श्वर्य</p> <p>महैश्वर्य</p>
अ/आ - ओ/औ = औ	<p>परम + औज = परमौज</p> <p>परम् अ + औज</p> <p style="text-align: center;">औ</p> <p>परम् औ ज</p> <p>परमौज</p> <p>महा + औषधि = महौषधि</p> <p>मह् आ + औषधि</p> <p style="text-align: center;">औ</p> <p>मह् औ षधि</p> <p>महौषधि</p>

उदाहरण

- | | | |
|-----------------|---|----------------|
| 1. परमैश्वर्य | — | परम + ऐश्वर्य |
| 2. सदैव | — | सदा + एव |
| 3. महैश्वर्य | — | महा + ऐश्वर्य |
| 4. परमौज | — | परम + ओज |
| 5. महौजस्वी | — | महा + ओजस्वी |
| 6. वनौषध | — | वन + औषध |
| 7. महौषध | — | महा + औषध |
| 8. लोकैषणा | — | लोक + एषणा |
| 9. हितैषी | — | हित + एषी |
| 10. तथैव | — | तथा + एव |
| 11. वसुधैव | — | वसुधा + एव |
| 12. सदैव | — | सदा + एव |
| 13. मतैक्य | — | मत + ऐक्य |
| 14. विचारैक्य | — | विचार + ऐक्य |
| 15. गंगौक | — | गंगा + ओक |
| 16. महौज | — | महा + ओज |
| 17. जलौषधि | — | जल + औषधि |
| 18. परमौत्सुक्य | — | परम + औत्सुक्य |
| 19. देवौदार्य | — | देव + औदार्य |
| 20. विश्वैक्य | — | विश्व + ऐक्य |
| 21. स्वैच्छिक | — | स्व + ऐच्छिक |

वित + एषणा त्र वितैषणा

परम + एन्द्रजालिक - परमैन्द्रजालिक

गंगा + ऐश्वर्य - गंगैश्वर्य

परम + औदार्य - परमौदार्य
 परम + औपचारिक - परमौपचारिक
 मृदा + औषधि - मृदौषधि

वृद्धि संधि की पहचान

वृद्धि संधि युक्त शब्दों में अधिकांशतः ऐ, औ की मात्राएं (' , ') आती हैं और इनका विच्छेद इन्हीं मात्राओं से होता है।

अपवाद

बिम्ब + ओष्ठ - बिम्बोष्ठ
 अधर + ओष्ठ - अधरोष्ठ
 दन्त + ओष्ठ - दतोष्ठ

वृद्धि संधि के विशेष नियम

यदि ऋण/दश/वसन/प्र/कंबल/वत्सतर के साथ ऋण शब्द का मेल हो रहा हो तो वहाँ वृद्धि एकादेश 'आर' होकर वृद्धि संधि हो जाती है।

ऋण + ऋण = ऋणार्थ (वृद्धि संधि)

दश + ऋण = दशार्ण (वृद्धि संधि)

वसन + ऋण = वसनार्ण (वृद्धि संधि)

प्र + ऋण = प्राण (वृद्धि संधि)

कम्बल + ऋण = कम्बलार्ण (वृद्धि संधि)

वत्सतर + ऋण = वत्सतरार्ण (वृद्धि संधि)

इन शब्दों के अलावा अन्य किसी शब्द के साथ ऋण शब्द का मेल होने पर 'गुण' एकादेश 'अर' होकर गुण संधि मान्य होगी।

जैसे - उत्तमर्ण = उत्तम + ऋण

महर्ण = महा + ऋण

स्वर शब्द के साथ ईर/ईरी/ईरिणी शब्दों का मेल होने पर वृद्धि एकादेश 'ए' किया जाता है व संधि होगी।

जैसे - स्वर + ईर = स्वरै (वृद्धि संधि)

अ/आ स्वर के साथ 'ऋत' शब्द का मेल होने पर वृद्धि एकादेश 'आर' होकर वृद्धि संधि होगी।

पिपासा + ऋत = पिपासार्त (वृद्धि)

सुख + ऋत = सुखार्त (वृद्धि)

'परम' शब्द के साथ 'ऋत' शब्द का मेल होने पर 'गुण' एकादेश 'अर' होकर गुण संधि हो जाती है।

परम + ऋत = परमर्त (गुण संधि)

किसी भी अकारान्त उपसर्ग प्र/उप/अप/अव के साथ 'ऋ' स्वर से आरम्भ होने वाली क्रियापद (ऋच्छति) का मेल होने पर वृद्धि पर एकादेश 'आर' किया जाकर वृद्धि संधि होगी।

जैसे – प्र + ऋच्छति = प्राच्छति (वृद्धि संधि)
 उप + ऋच्छति = उपाच्छति (वृद्धि संधि)

अ/आ स्वर के साथ ऐहि/ओम/ओदन शब्दों का मेल होने पर केवल संयोग कार्य ए/ओ किया जाता है।

शिव + ऐहि = शिवेहि (संयोग)

शुक + ओदन = शुकोदन (संयोग)

शिवाय + ओम = शिवायोम (संयोग)

अ/आ स्वर के साथ ओष्ठ/ओतु शब्द का मेल होने पर विकल्प से वृद्धि एकादेश 'औ' तथा संयोग कार्य 'ओ' दोनों किए जा सकते हैं।

जैसे –

कण्ठ + ओष्ठ = कठौष्ठ (वृद्धि), कंटोष्ठ (संयोग)

दन्त + ओष्ठ = दन्तौष्ठ (वृद्धि), दंतोष्ठ (संयोग)

(iv) यण संधि

- यदि इ या ई, उ या ऊ, तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो—
 इ, ई का य, उ, ऊ का व, ऋ का र हो जाता है, साथ ही बाद वाले शब्द के पहले स्वर की मात्रा य, व, र में लग जाती है।



उदाहरण

1. अत्यधिक	–	अति + अधिक
2. इत्यादि	–	इति + आदि
3. नद्यागम	–	नदी + आगम
4. अत्युत्तम	–	अति + उत्तम
5. अत्यूष्म	–	अति + ऊष्म
6. प्रत्येक	–	प्रति + एक
7. स्वच्छ	–	सु + अच्छ
8. स्वागत	–	सु + आगत
9. अन्वेषण	–	अनु + एषण
10. अन्विति	–	अनु + इति
11. पित्राज्ञा	–	पितृ + आज्ञा
12. अत्यल्प	–	अति + अल्प
13. व्यसन	–	वि + असन
14. अध्यक्ष	–	अधि + अक्ष
15. पर्यंक	–	परि + अंक
16. अभ्यर्थी	–	अभि + अर्थी
17. अभ्यंतर	–	अभि + अंतर
18. व्यय	–	वि + अय
19. पर्यवेक्षक	–	परि + अवेक्षक
20. व्यर्थ	–	वि + अर्थ
21. अत्यन्त	–	अति + अन्त
22. प्रत्यक्ष	–	प्रति + अक्ष
23. रीत्यनुसार	–	रीति + अनुसार
24. व्यवहार	–	वि + अवहार
25. न्यस्त	–	नि + अस्त
26. अध्ययन	–	अधि + अयन
27. प्रत्यय	–	प्रति + अय

28. गत्यवरोध	–	गति + अवरोध
29. गत्यनुसार	–	गति + अनुसार
30. व्यष्टि	–	वि + अष्टि
31. प्रत्यर्पण	–	प्रति + अर्पण
32. अभ्यागत	–	अभि + आगत
33. प्रत्याशा	–	प्रति + आशा
34. अत्याचार	–	अति + आचार
35. व्याकुल	–	वि + आकुल
36. अभ्यास	–	अभि + आस
37. अत्यावश्यक	–	अति + आवश्यक
38. व्यापक	–	वि + आपक
39. पर्याप्त	–	परि + आप्त
40. पर्यावरण	–	परि + आवरण
41. अध्यादेश	–	अधि + आदेश
42. व्यास	–	वि + आस
43. व्याप्त	–	वि + आप्त
44. न्याय	–	नि + आय
45. व्याकरण	–	वि + आकरण
46. व्यायाम	–	वि + आयाम
47. व्याधि	–	वि + आधि
48. प्रत्यारोपण	–	प्रति + आरोपण
49. अभ्युदय	–	अभि + उदय
50. प्रत्युत्तर	–	प्रति + उत्तर
51. उपर्युक्त	–	उपरि + उक्त
52. प्रत्युपकार	–	प्रति + उपकार
53. न्यून	–	नि + ऊन
54. अत्यैश्वर्य	–	अति + ऐश्वर्य
55. देव्यर्पण	–	देवी + अर्पण
56. नद्यर्पण	–	नदी + अर्पण
57. देव्यागमन	–	देवी + आगमन
58. नार्युचित	–	नारी + उचित
59. स्त्र्युचित	–	स्त्री + उचित
60. स्त्र्युपयोगी	–	स्त्री + उपयोगी
61. नद्युर्मि	–	नदी + ऊर्मि
62. अत्यौचित्य	–	अति + औचित्य
63. स्वल्प	–	सु + अल्प
64. मन्वन्तर	–	मनु + अन्तर
65. स्वच्छ	–	सु + अच्छ
66. मध्वरि	–	मधु + अरि
67. तन्वंगी	–	तनु + अंगि
68. स्वस्ति	–	सु + अस्ति
69. गुर्वादेश	–	गुरु + आदेश
70. गुर्वाज्ञा	–	गुरु + आज्ञा
71. वध्वागमन	–	वधू + आगमन
72. अन्विति	–	अनु + इति
73. अन्वीक्षण	–	अनु + ईक्षण
74. अन्वीक्षा	–	अनु + ईक्षा
75. गुर्वोदार्य	–	गुरु + औदार्य
76. पित्रनुमति	–	पितृ + अनुमति
77. मात्राज्ञा	–	मातृ + आज्ञा

78. पित्रादेश	–	पितृ + आदेश
79. वक्त्रुद्बोधन	–	वक्त्रु + उद्बोधन
80. लाकृति	–	लृ + आकृति
81. सुध्युपास्य	–	सुधी + उपास्य
82. त्र्यम्बकम	–	त्रि + अम्बकम
83. स्वस्त्ययन	–	स्वस्ति + अयन

यण संधि की पहचान

यण संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत य, व, र से पहले आधा वर्ण आता है और इनका विच्छेद इन्ही वर्णों से किया जाता है।

शब्द में आधा अक्षर + य, व, र, लिखा हुआ है तो – आधे अक्षर को पूरा लिख दो

य, व, र के अनुसार मात्रा लगा दो

य हो तो इ/ई की मात्रा

व हो तो उ/ऊ की मात्रा

र हो तो ऋ की मात्रा

य, व, र को छोड़कर शेष, शब्दांश + के आगे लिख दो।

अधि + अधिन = अध्यधीन

देवी + ऐश्वर्य = देव्यैश्वर्य

नोट – यदि किसी शब्द के आरम्भ में 'स्व' शब्दांश लिखा हुआ है एवम उसका अर्थ अपना/अपनी/अपने प्रकट हो रहा है तो वहाँ संधि विच्छेद करते समय 'स्व' शब्दांश को + से पहले लिखना चाहिए एवं + के बाद यण संधि के अलावा अन्य संधि नियमों के अनुसार शब्द लिखना चाहिए।

स्व + अर्थी = स्वार्थी (दीर्घ संधि)

स्व + अवलम्बन = स्वावलम्बन (यण संधि)

स्व + इच्छा = स्वेच्छा (गुण संधि)

स्वः + ग = स्वर्ग (विसर्ग संधि)

सत्य + आग्रह = सत्याग्रह (दीर्घ संधि)

(v) अयादि संधि

- यदि 'ए' या 'ऐ' 'ओ' या 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो 'ए' का अय्, ऐ का आय् हो जाता है।

जैसे– नयन – ने + अन
नायक – नै + अक

- ओ का अव, औ का आव हो जाता है।

जैसे–

पवन – पो + अन

पावक – पौ + अक

ए	ओ	ऐ	औ
↓	↓	↓	↓

अय् अय् आय् आव् हो जाता है।



ऐ – अय	ऐ – आय
ने + अन त्र नयन न् ए + अन ↓ अय् न् अय् अ न नयन	गै + इका त्र गायिका ग् ऐ + इका ↓ आय ग् आय् इका गायिका
ओ – अव्	औ – आव
हो + अन – हवन ह् ओ + अन ↓ अव् ह् अव् अन हवन	पौ + अन त्र पावन प् औ + अन ↓ आव् प् आव् अन पावन

उदाहरण

1. भवन	–	भो + अन
2. संचय	–	संचे + अ
3. शयन	–	शे + अन
4. नय	–	ने + अ
5. विजयिनी	–	विजे + इनी
6. विनायक	–	विनै + अक
7. विधायिका	–	विधै + इका
8. पायक	–	पै + अक
9. गायक	–	गै + अक
10. विधायक	–	विधै + अक
11. सायक	–	सै + अक
12. हवन	–	हो + अन
13. गवीश	–	गो + ईश
14. श्रवण	–	श्रो + अन
15. विभव	–	विभो + अ
16. भविष्य	–	भो + इष्य
17. पवित्र	–	पो + इत्र
18. वटवृक्ष	–	वटो + वृक्ष
19. श्रावक	–	श्रौ + अक
20. धाविका	–	धौ + इका
21. अय	–	ए + आ
22. चयन	–	चे + अन
23. नयन	–	ने + अन
24. गायन	–	गै + अन
25. शायक	–	शै + अक
26. भवति	–	भो + अति
27. भाव	–	भौ + अ
28. आवि	–	औ + अ
29. भावुक	–	भौ + उक
30. शाविक	–	शौ + इक
31. दायिनी	–	दै + इनी
32. द्वावेव	–	द्वौ + एव

नोट –

कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिसमें एक से अधिक संधि भी होती है।

गवेन्द्र-	गो	+	इन्द्र	-	अयादि
	गव	+	इन्द्र	-	गुण
गवाक्ष -	गो	+	अक्ष	-	अयादि
	गव	+	अक्ष	-	गुण

अपवाद

पो + इत्र = पवित्र (अयादि) → अच् - ओ का नियम
(LDC - 2022)

पू + इत्र = पवित्र (यण) → ऊ + ई = वि का नियम
कुछ इतिहासकारों ने स्वर संधि के अन्य रूपों को भी स्वीकार किया है जो निम्न है-

पररूप संधि

यदि किसी शब्द के अन्त में अ, आ के बाद ए, ओ में से कोई एक वर्ण हो तो पदान्त अ, आ का पररूप एकादेश हो जाता है।

जैसे -

दन्तोष्ठ	-	दन्त + ओष्ठ
शुद्धोदन	-	शुद्ध + ओदन
अधरोष्ठ	-	अधर + ओष्ठ
बिम्बोष्ठ	-	बिम्ब + ओष्ठ

पूर्व रूप

यदि पद के अन्त में ए, ओ के बाद ह्रस्व 'अ' हो तो अ का पूर्व एकादेश हो जायेगा तथा विकल्प से 'अ' के लुप्त पद स्थान पर अवग्रह 'अ' (ऽ) हो जायेगा।

जैसे -

मनोऽभिलाषा / मनोभिलाषा	-	मनो + अभिलाषा
यशोऽधिकार / यशोधिकार	-	यशो + अधिकार
मनोऽभिमान / मनोभिमान	-	मनो + अभिमान
सोऽपि / सोपि	-	सो + अपि

स्वर संधि के विशेष नियम

- यदि पदान्त अ के परे अ हो तो विकल्प से अ + अ = अ हो जाता है।

जैसे -

पतंजलि	-	पतत् + अंजलि
कुलटा	-	कुल + अटा
अपंग	-	अप + अंग
सारंग	-	सार + अंग
सीमत	-	सीम + अन्त
मार्तण्ड	-	मार्त + अंड
कर्कन्धु	-	कर्क + अंधु
मनीषा	-	मनस् + ईषा

- जिन शब्दों के अन्त में अक्ष व रात्र पद लिखा हो तो संधि विच्छेद करते समय अक्ष का अक्षि, रात्र का रात्रि हो जाता है।

जैसे -

प्रत्यक्ष	-	प्रति + अक्षि
सहस्राक्ष	-	सहस्र + अक्षि
नवरात्र	-	नव + रात्रि

2. व्यंजन संधि

व्यंजन संधि में एक व्यंजन का किसी दूसरे व्यंजन से अथवा स्वर से मेल होने पर दोनों मिलने वाली ध्वनियों में विकार उत्पन्न हो जाता है। इस विकार से होने वाली संधि को व्यंजन संधि कहते हैं।



जैसे - व्यंजन + व्यंजन - व्यंजन
व्यंजन + स्वर - व्यंजन
स्वर + व्यंजन - व्यंजन

व्यंजन संधि के प्रमुख नियम निम्नलिखित हैं-

नियम - 01

- यदि प्रत्येक वर्ण के पहले वर्ण अर्थात् क, च, ट, त, प के बाद किसी वर्ण का तीसरा, चौथा वर्ण आए या य, र, ल, व या कोई स्वर आए तो क, च, ट, त, प के स्थान पर अपने ही वर्ण का तीसरा वर्ण अर्थात् ग, ज, ड, द, ब हो जाता है।

• (क च ट त प)
↓ ↓ ↓ ↓ ↓
ग ज् ड् द् ब्
+ (ग, घ, ज, झ, ङ, ढ, द, ध, ब, भ, य, व, र, ल) + स्वर

जैसे

वागीश	-	वाक् + ईश
दिग्गज	-	दिक् + गज
वाग्दान	-	वाक् + दान
सद्वाणी	-	सत् + वाणी
अजंत	-	अच् + अन्त
अबिंधन	-	अप् + इंधन
तद्रूप	-	तत् + रूप
जगदानन्द	-	जगत् + आनन्द
शब्द	-	शप् + द
जगदीश	-	जगत् + ईश
अब्ज	-	अप् + ज
प्रागैतिहासिक	-	प्राक् + ऐतिहासिक

वाग्जाल	-	वाक् + जाल
सद्गति	-	सत् + गति
दिग्विजय	-	दिक् + विजय
षडानन	-	षट् + आनन
ऋग्वेद	-	ऋक् + वेद
उद्घोष	-	उत् + घोष
सुबन्त	-	सुप् + अन्त
वागीश्वरी	-	वाक् + ईश्वरी

चिदानन्द	-	चित् + आनन्द
सदाचार	-	सत् + आचार
षड्दर्शन	-	षट् + दर्शन
वाग्दत्ता	-	वाक् + दत्ता
दिगम्बर	-	दिक् + अम्बर
सद्वाणी	-	सत् + वाणी
उद्दंड	-	उत् + दंड
उद्धृत	-	उत् + धृत
सदानन्द	-	सत् + आनन्द
जगदम्बा	-	जगत् + अम्बा
वाग्हरि/वाग्धरी	-	वाक् + हरि
वृहदारण्यक	-	वृहत् + आरण्यक
सदुपयोग	-	सत् + उपयोग
सच्चिदानन्द	-	सत् + चित् + आनन्द
		सच्चित् + आनन्द

पश्चात् + वर्ती	=	पश्चादवर्ती
सत् + धर्म	=	सद्धर्म
महत + इच्छा	=	महदिच्छा
सत् + व्यवहार	=	सद्व्यवहार
सत् + विचार	=	सद्विचार
अप् + धि	=	अधि

यदि पद के अन्त में स्, त्, थ्, द्, ध्, न् के बाद श्, च्, छ्, ज्, झ्, ज्ञ् में कोई वर्ण हो तो पद के अन्त में आए स्, त्, थ्, द्, ध्, न् के स्थान पर क्रमशः श्, च्, छ्, ज्, झ्, ज्ञ् हो जायेगा।

- त्, थ्, द्, ध्, न्, स्
↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ का नियम
च् छ् ज् झ् ज्ञ् श्

जैसे -

रामश्शेते	-	रामस् + शेते
सच्चित	-	सत् + चित
शरच्चन्द्र	-	शरत् + चन्द्र
सच्चरित्र	-	सत् + चरित्र

नोट -

कुछ उदाहरण ऐसे होते हैं जो उपर्युक्त दोनों नियमों से भी बनते हैं जो निम्न है -

उज्ज्वल	-	उद् + ज्वल
विपज्जाल	-	विपत्/विपद् + जाल
जगज्जननी	-	जगत् + जननी
यावज्जीवन	-	यावत् + जीवन
उच्चारण	-	उत् + चारण
महच्छत्र	-	महत् + छत्र
सज्जन	-	सत् + जन
		सद् + जन

- पद के अन्त में त् के बाद न् होने पर त् के स्थान पर न् हो जाता है।

जैसे -

जगन्नाथ	-	जगत् + नाथ
श्री मन्नारायण	-	श्रीमद् + नारायण
उन्नयन	-	उत् + नयन
जगन्निवास	-	जगत् + निवास
उन्नति	-	उत् + नति

- यदि पद के अन्त में स्, त्, थ्, द्, ध्, न् के बाद में ष्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् हो तो
स त थ द ध न + ष्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्
↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ हो जाता है।
ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्

जैसे -

तट्टीका	-	तत् + टीका
रामषष्ठ	-	रामस् + षष्ठ
उड्डीयते	-	उत् + डीयते
उड्डयन	-	उत्/उड् + डयन

- यदि पद के अन्त में त्, थ्, द्, ध्, न् के बाद ल हो तो पद के अन्त में स्थित त्, थ्, द्, ध्, न् के स्थान पर ल् हो जाता है।

जैसे -

पल्लव	-	पत्/पद् + लव
उल्लास	-	उत् + लास
उल्लेख	-	उत् + लेख
उल्लंघन	-	उत् + लंघन
तल्लीन	-	तत् + लीन
विद्युल्लेखा	-	विद्युत् + लेखा
विद्वल्लिखित	-	विद्वान् + लिखित

- यदि पद के अन्त में त् हो व उसके आगे 'ह' हो तो त् के स्थान पर 'द' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जायेगा।

जैसे -

उद्धार	-	उत् + हार
उद्धरण	-	उत् + हरण
तद्धित	-	तत् + हित
पद्धति	-	पत् + हति

उत् + हल	-	उद्धत
उत् + ह्रत	-	उद्धृत

- यदि पद के अन्त में क्, च्, ट्, त्, प् में से कोई वर्ण हो व उसके बाद कोई नासिक्य वर्ण ड्, ञ्, ण्, न्, म् हो तो क्, च्, ट्, त्, प् के स्थान पर आए हुए वर्ण के वर्ग का पंचम अक्षर हो जायेगा।

क् च् ट् त् प् + ड्, ञ्, ण्, न्, म्	
↓ ↓ ↓ ↓ ↓	
ड् ञ् ण् न् म्	

जैसे -

एतन्मुरारि	-	एतत् + मुरारि
------------	---	---------------